बावरा अहेरी

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-6)

डॉ. सुरेश चंद्र पाण्डेय

बावरा अहेरी

अज्ञेय काव्य विवेचन

(खण्ड-6)

डॉ. सुरेश चन्द्र पाण्डेय

अव. प्राप्त रीडर-अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डी.ए.वी.पी.जी कॉलेज

आजमगढ़ (उ.प्र.)

विषय-क्रम

वस्तु-भाव-विवेचन : रचनाओं का वर्गीकरण : 5

1.प्रकृति-आध्यात्मिक चेतना 6

2. विचार-दर्शन 24

3.कवि-कर्म : (अभिव्यक्ति की मर्यादा) 32

4. रूप-चित्रण 38

5. अन्तरंग क्षणों/ अनुभूतियों से सम्बन्धित रचनाएँ 40

6. सामाजिक/राजनैतिक संदर्भ 43

7.लीला-भाव 49

मूल्यांकन/निष्कर्ष
अभिव्यक्ति-विधान
तद्भव/बोली के शब्द
बिम्ब-विधान
प्रकृति से चुने गए बिम्ब
प्रकाश का बिम्ब
मिश्रित बिम्ब
गंध का बिम्ब
विरोधी भावों के बिम्ब
जीवन, जीवन की भंगुरता, अवसाद (निराशा) के बिम्ब
शिशु-वात्सल्य भाव के बिम्ब
प्रकृति के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को उभारने वाले बिम्ब
कुछ विशिष्ट बिम्ब
लय-गति बोधक बिम्ब
विशिष्ट पद योजना
वृक्ष-वनस्पतियाँ
पक्षी-पशु

दो पड़ावों के बीच (संधि-काल) की रचनाएँ

साधु भाषा की खोज, अभिव्यक्ति क्षमता में निखार की दृष्टि से, ‘इत्यलम्' से 'हरी घास पर क्षण भर' तक, अज्ञेय की काव्य-यात्रा में पहला पड़ाव है। यह अज्ञेय की स्वीकारोक्ति है और इसकी व्याख्या यथा-प्रसंग की जा चुकी है। इसके बाद 'अरी ओ करुणा प्रभामय' को अज्ञेय ने भाषा और संवेदना के विकास की दृष्टि से, दूसरा पड़ाव या मंजिल माना है।[1] 'हरी घास पर क्षण भर' का प्रकाशन वर्ष 1948 है और 'अरी ओ करुणा प्रभामय' का प्रकाशन काल 1959 है। 1948 और 1959 के बीच दो काव्य संग्रह आते हैं- 'बावरा अहेरी' और 'इन्द्र धनु रौंदे हुए ये' जिनका प्रकाशन का वर्ष क्रमश: 1954 और 1957 है। इस प्रकार, इन दोनों काव्य संग्रहों की रचनाएँ दो पड़ावों के बीच की रचनाएँ हैं। इस आधार पर, इन्हें संधिकाल की रचनाएँ कहा गया है।

[1] अज्ञेय अपने बारे में (रेडियो जीवनी) पृष्ठ,69

बावरा अहेरी

'बावरा अहेरी' का प्रकाशन वर्ष 1954 है। इस संग्रह में सन् 1950 से 1953 तक की 32 रचनाएँ तथा 1940 की रचना 'वसन्त गीत' तथा 1942 की रचना 'ये मेघ साहसिक सैलानी' (कुल 34 रचनाएँ) शामिल हैं। 'बावरा अहेरी'-पृथक संग्रह में एक और रचना 'वसन्त की बदली' (रचना काल 1948) भी शामिल है। 'सदानीरा' भाग-1 में 'वसन्त की बदली' 'हरी घास पर क्षण भर' में सम्मिलित की गयी है। इस प्रकार 'सदानीरा' भाग--1 के अनुसार 'बावरा अहेरी' में कुल 34 रचनाएँ आती हैं।

बावरा अहेरी-अभिधान :

'बावरा अहेरी' एक सशक्त प्रतीक है। इस संग्रह के अभिधान का विवेचन संग्रह की प्रतिनिधि रचना-'बावरा अहेरी' के विवेचन-प्रसंग में किया जाएगा।

वस्तु-भाव-विवेचन : रचनाओं की प्रकृति :

संग्रह की रचनाएँ विविध विषयों से संबंधित हैं यथा;

1. प्रकृति-आध्यात्मिक चेतना;
2. विचार-दर्शन
3. कवि-कर्म (अभिव्यक्ति की मर्यादा);
4. रूप-चित्रण;
5. अन्तरंग क्षणों/अनुभूतियों से सम्बन्धित रचनाएँ;
6. सामाजिक/ राजनैतिक संदर्भ;
7. लीला-भाव।